जनपद भदोही के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के संवेगात्मक स्तर का अध्ययन

सतीश कुमार द्विवेदी[1], डॉ. सुनिता सारस्वत[2]

[1]शोध छात्र, [2]शोध निर्देशिका

शोध सार:
शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध प्रपत्र में जनपद भदोही के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के संवेगात्मक स्तर का अध्ययन किया है। सम्बन्धित अध्ययन के लिए वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अर्न्तगत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोधकर्ता द्वारा शोध कार्य हेतु डा0 एस के मंगल एवं डा0 शुभ्रा मंगल के संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया है। उक्त परीक्षण के द्वारा भावात्मक बुद्धि से सम्बन्धित समस्त आकड़े एकत्रित किए गए हैं। न्यादर्श के रूप में 10 परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा 5 में पढ़ने वाले 600 बच्चों (300 छात्र–300 छात्राओं) को लिया गया है। अध्ययन के लिए एक परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है। शोध अध्ययन के बाद निष्कर्ष रूप में पाया गया कि प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के भावनात्मक स्तर में कोई अन्तर नहीं होता अर्थात प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के भावनात्मक स्तर में एकरूपता पायी गयी। इस तरह भावनात्मक बुद्धि के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि छात्र–छात्राओं के भावनात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

शब्द कुंजी– जनपद भदोही, प्राथमिक विद्यालय, संवेगात्मक बुद्धि,

प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति के व्यवहारों को परिमार्जित कर उसमें गुणात्मक सुधार लाती है जिससे व्यक्ति समाज में समायोजन स्थापित कर पाता है। राज्य द्वारा दी जाने वाली शिक्षा में अनौपचारिक शिक्षा वह माध्यम है जो समाज की आवश्कताओं की पूर्ति करता है जिसके द्वारा बालकों में वही परिवर्तन किए जाते हैं जो समाज द्वारा मान्य है। इस शिक्षा को विद्यालयी शिक्षा भी कहते है। जिसके द्वारा व्यक्ति समाज से सामंजस्य स्थापित कर पाता है। विद्यालयी शिक्षा के द्वारा ही बालक में सामाजिक गुणों का विकास कर उसे समाज के योग्य बनाया जाता है। अतः यह हम स्पष्ट रूप से कह सकते है कि शिक्षा की प्राप्ति के लिए विद्यालय एक महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा प्राप्त करने के लिये बालकों को सर्वप्रथम प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश कराया जाता है। प्राथमिक शिक्षा किसी भी देश के विकास की आधारशिला होती है। प्राथमिक शिक्षा को आधारभूत शिक्षा भी कहते हैं। पहले यह माना जाता था कि व्यक्ति के शैक्षिक विकास में मानसिक बुद्धि का ही महत्वपूर्ण योगदान है। लेकिन बाद के अध्ययनों से पता चला कि मानसिक बुद्धि से अधिक व्यक्ति के शैक्षिक विकास में भावात्मक बुद्धि का योगदान है अर्थात बालक के विकास को अच्छी तरह से समझने के लिए मानसिक बुद्धि के साथ–साथ उसके भावात्मक बुद्धि को भी समझना जरूरी है। भावात्मक बुद्धि अर्थात अपने भवनाओं को समझने के साथ–साथ दूसरे के भवनाओं को समझने और परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की क्षमता। सरल शब्दों में भावनात्मक बुद्धि एक तरह से भावनाओं का सहीं ढ़ग से जीवन में प्रयोग करने की क्षमता है। जीवन में व्यक्ति की उन्नति एवं सफलता के लिये केवल सामान्य बुद्धि ही आवश्यक नहीं हैं सामान्य बुद्धि के साथ भावनात्मक बुद्धि भी जरूरी है। सामान्य बुद्धि से व्यक्ति पद प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। पर उस पर बने रहने के लिए आवश्यक गुणों की प्राप्ति भावनात्मक बुद्धि से ही संभव है। यह एक प्रश्न है कि क्या अच्छी भावात्मक बुद्धि वाले बालकों की शैक्षिक उपलब्धि और परिस्थितियों से समायोजन करने की क्षमता अच्छी होती है निम्न भावनात्मक बुद्धि वाले बालकों की अपेक्षा।

अध्ययन की आवश्यकता

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के भावात्मक बुद्धि का अध्ययन किया गया है। उच्च एवं निम्न भावात्मक बुद्धि वाले बालकों में पाये जाने वाले अन्तर को समझने का प्रयास किया गया है।

शोध की आवश्यकता को हम निम्नलिखित बिन्दुओं के द्वारा स्पष्ट कर सकते है –
1. प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं का भावनात्मक स्तर का पता लग सकेगा।
2. प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं का भावनात्मक स्तर ज्ञात कर उन्हें उचित मार्गदर्शन दिया जा सकेगा।
3. प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के भावात्मक बुद्धि का सही दिशा में उपयोग हो सकेगा।

कठिन शब्दों का परिभाषीकरण

जनपद भदोही

भदोही शब्द भरद्रोही का अपभ्रंश है 'भदोही' लगभग 400 वर्ष पूर्व 'भर राज्य' के नाम से जाना जाता था। जिसके शासक भर थे। जिनको जयपुर से आए 'मौन' गोत्रिय कछवाहा वंश के 'मौनस' राजपूतों ने जो अपने को 'राम' के पुत्र 'कुश' का वंशज मानते हैं पराजित कर भरद्रोही या भदोही की स्थापना की थी। जनपद के रूप में भदोही का निर्माण 30 जून 1994 को उत्तर प्रदेश राज्य के 65 वें जिले के रुप में हुआ था। वर्तमान समय में भदोही भारत के राज्य उत्तर प्रदेश का एक जिला है। भदोही जिले का मुख्यालय ज्ञानपुर है। यह जिला वर्तमान समय में मिर्जापुर संभाग के अन्तर्गत आने वाले तीन जिलों में से एक है। यह उत्तर प्रदेश के सबसे छोटे जिला है इसे ''कारपेट सिटी'' के नाम से भी जाना जाता है। इस जनपद का प्रसिद्ध पर्यटन स्थल सीतामढ़ी है यहाँ प्रभु श्रीराम की पत्नी माता सीता का समाहित स्थल है। जनपद भदोही में तीन तहसील– औराई, भदोही तथा ज्ञानपुर हैं। जनपद भदोही में 6 खण्ड (ब्लाक)– औराई, भदोही, ज्ञानपुर, डीघ, अभोली तथा सुरियावाँ है। जनपद भदोही का क्षेत्रफल 1056 वर्ग किमी है।

प्राथमिक विद्यालय

प्राथमिक विद्यालय वह निर्धारित स्थान है जहाँ पर प्राथमिक शिक्षा अर्थात 1 से 5 तक की शिक्षा दी जाती है। नई शिक्षा नीति– 2020 के अनुसार प्राथमिक विद्यालय वह स्थान है जहाँ 5+3+3+4 की शिक्षा में दूसरे नम्बर के 3 की शिक्षा दी जाती है अर्थात कक्षा–3, कक्षा–4 एवं कक्षा–5 की शिक्षा दी जाती है। सरल शब्दों में कहे तो 8 वर्ष से 11 वर्ष की शिक्षा जहाँ प्राप्त की जाती है उसे प्राथमिक विद्यालय कहते है। प्राथमिक स्तर की शिक्षा के अन्तर्गत पढ़ना, लिखना, वर्तनी सुधार, लेखन सुधार, अंक पहचान, अंक लेखन, गिनती, पहाड़ा एवं पारस्परिक संचार का ज्ञान कराया जाता है।

भावनात्मक बुद्धि

संवेगात्मक बुद्धि की अवधारणा की तरफ शिक्षा शास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों का ध्यान व्यापक रूप से ले जाने का श्रेय डेनियल गोलमैन को है । जिसने संवेगात्क बुद्धि की अवधारणा को व्यापक पहचान दिया। भावनात्मक बुद्धि अर्थात भावनाओं और बुद्धि का संयोग जिसमें व्यक्ति हृदय एवं मष्तिक को मिलाकर कोई निर्णय लेता है और अपने एवं दूसरों की भावनाओं को समझने का प्रयास करता है। परिस्थितियों से समायोजन स्थापित करता है। जहां बुद्धि का संबंध व्यक्ति के संज्ञानात्मक पक्ष से होता है वही भावनात्मक पक्ष का संबंध व्यक्ति की भवनाओं से होता है। भावनाएं दो तरह की नकारात्मक एवं सकारात्मक होती है जैसे– ममता, प्रसन्नता, खुशी, आश्चर्य, प्रेम आदि सकारात्मक संवेग है। जबकि क्रोध, भय, घृणा, दुख एवं काम आदि नकारात्मक भावनाएं है। सकारात्मक संवेग जहां व्यक्ति को सुसमायोजित करती है वहीं नकारात्मक संवेग कुसमायोजित कर देती है। अतः इन्हीं भावनाओं के सही उपयोगी व प्रभावी ढंग से प्रबन्धन एवं नियंत्रण करने की क्षमता को भानात्मक बुद्धि कहते हैं।

शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है–
1. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भावनाओं को समझना ।
3. उच्च एवं निम्न भावनात्मक बुद्धि वाले बालकों में अन्तर को पता करना।

परिकल्पना

H01- प्राथमिक स्तर के विद्यालय के छात्र–छात्राओं के भावनात्मक स्तर में कोई अंतर नहीं होता है।

अध्ययन की रूप रेखा

1. छात्र–छात्राओं के भावनात्मक स्तर का अध्ययन।

शोध की विधि

प्रस्तुत शोध की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए शोध कर्ता ने शोध कार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

प्रतिदर्श चयन

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा 10 प्राथमिक स्कूलों के विगत 4 वर्षो के कुल 600 बच्चों का न्यादर्श के रुप में शोध के लिये चयन किया गया। संख्या अधिक होने के कारण प्रत्येक सत्र से यादृच्छिक चयन विधि से 20 प्रतिशत विद्यार्थियों का ही चयन किया गया जिसमें 300 छात्राएँ और 300 छात्र थे।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

1. भावात्मक बुद्धि मापनी– डा0 एस के मंगल एवं शुभ्रा मंगल

सांख्यिकीय विधियां

प्राप्त सूचनाओं के विश्लेषण एवं विवेचनात्मक अध्ययन के लिए उचित सांख्यिकीय विधियों मध्यमान, मानक विचलन एवं t मूल्य का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध के उददेश्यों की प्राप्ति हेतु निम्न लिखित सारणी को वर्गीकृत किया गया है।

तालिका –1.0

➢ **छात्र–छात्राओं के भावनात्मक स्तर का अध्ययन**

क्रम संख्या	वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t मूल्य	सार्थकता स्तर
1	छात्राओं का भावनात्मक स्तर	300	126.95	11.7	–24.25	असार्थक
2	छात्रों का भावनात्मक स्तर	250	117.25	12.4		

सार्थकता स्तर सारणी मान

सार्थकता स्तर	सारणी मान
***Sig. at 0.05**	**- 1.47**
***Sig. at 0.01**	**- 1.73**

उपस्थित छात्र– छात्राओं के गणना के पश्चात t का प्राप्त मान –24.25 रहा जो 0 .05 स्तर एवं 0.01 स्तर दोनो से निम्न है इसलिए असार्थक है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना "प्राथमिक स्तर के विद्यालय के छात्र–छात्राओं के भावनात्मक स्तर में कोई अंतर नहीं होता है" स्वीकृत की जाती है इसका तात्पर्य यह है कि प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र– छात्राओं के भावनात्मक स्तर में एकरूपता पायी जाती है अतः शोधार्थी ने गणनोपरान्त पाया कि प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र– छात्राओं में भावनात्मक रूप से विभिन्नता नही पायी जाती है। सम्बन्धित ऑकड़ो का विवरण उपरोक्त **तालिका संख्या –1.0** में दिया गया है।

❖ **उपरोक्त आकडों को शोधार्थी द्वारा बार ग्राफ–1 एवं 2 के माध्यम से निचे प्रदर्शित किया गया है–**

ग्राफ–1

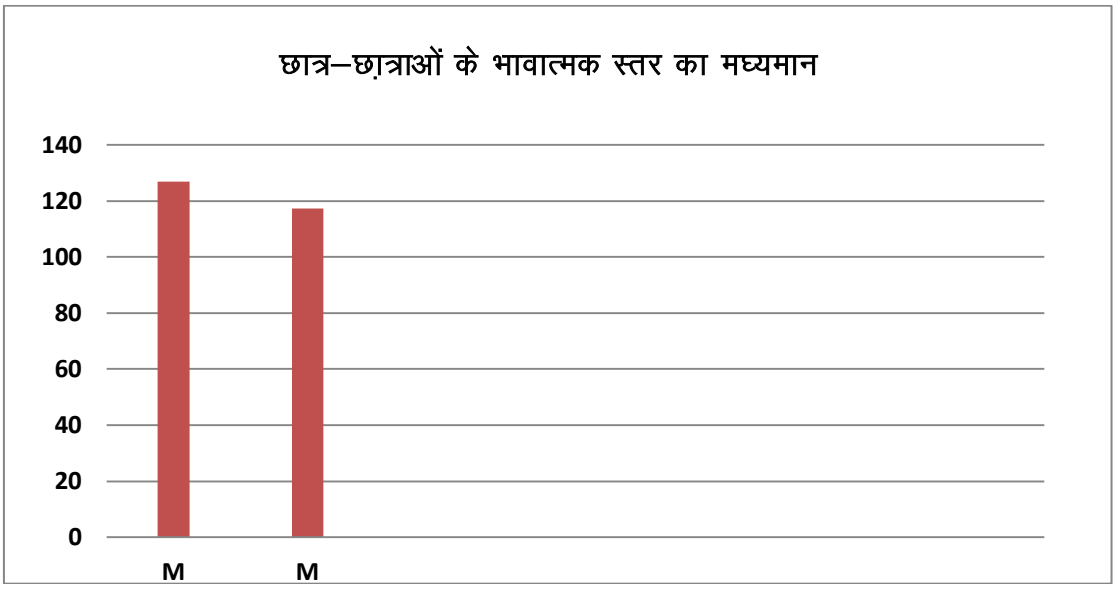

ग्राफ–2

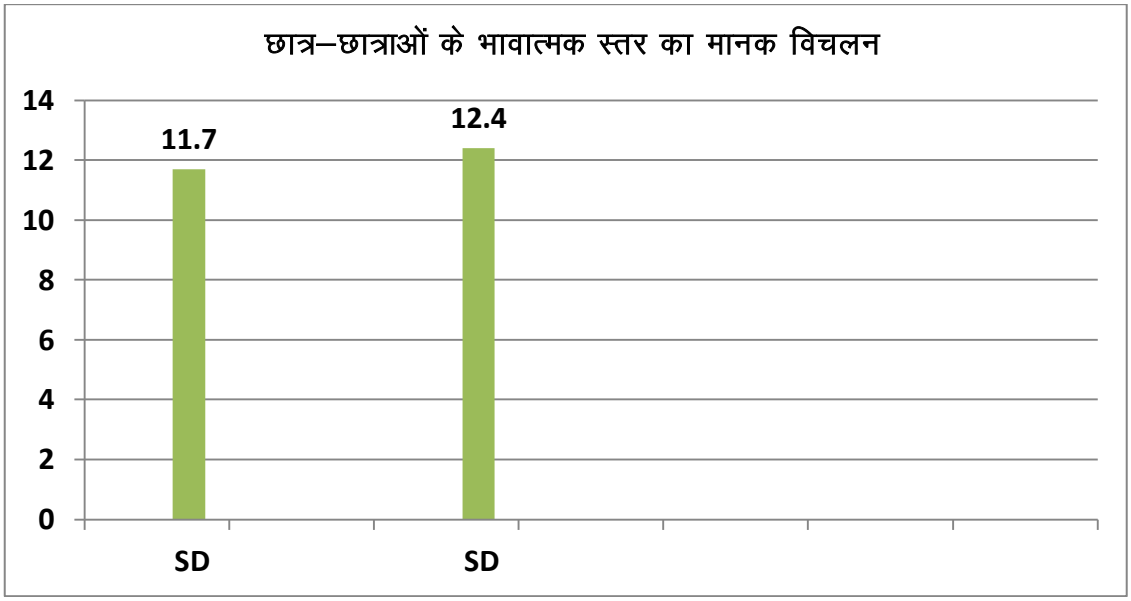

निष्कर्ष एवं व्याख्या

शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध प्रपत्र में परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के भावात्मक बुद्धि का अध्ययन किया है प्रपत्र से सम्बन्धित समस्त प्रदत्तों के संग्रहण, विश्लेषण और गणना सम्बन्धी कार्य के पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त हुआ उसकी व्याख्या निम्नवत है–

शोध निष्कर्ष में शोधार्थी ने पाया कि प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं का भावनात्मक स्तर समान है। शोध परिणाम छात्र–छात्राओं में भावनात्मक रूप से एकता को दर्शाता है। **तालिका –1.0।**

जिन छात्र–छात्राओं की भावनात्मक बुद्धि औसत से उपर थी उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी थी। शोधार्थी ने अध्ययन के दौरान पाया कि प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत 50 % बालकों की भावनात्मक बुद्धि औसत से उपर थी। जिन बालकों की भावनात्मक बुद्धि औसत से उपर थी उनकी शैक्षिक उपलब्धि अच्छी थी। शिक्षक से पूछने पर पता चला की ये बालक पढने में तेज, सहयोगात्मक प्रवृति के और अतिरिक्त विद्यालयी क्रियाकलापों में बढ–चढ कर भाग लेने वाले हैं। उच्च भावनात्मक बुद्धि वाले बच्चे विद्यालयी क्रियाकलापों में अपनी सूझ का प्रयोग कर रहे थे एवं वे काफी शान्त और गम्भीर थे। इसी तरह प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत 44 % बालकों की भावनात्मक बुद्धि औसत से नीचे थी। ऐसे

बालकों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च भावनात्मक बुद्धि वाले छात्रों की अपेक्षा कम पायी गयी साथ ही निम्न भावनात्मक बुद्धि वाले बच्चों में गम्भीरता एकाग्रता एवं सूझ का आभाव पाया गया। भावात्मक बुद्धि का व्यक्ति के जीवन में बहुत ही महत्व है एक अच्छी भावनात्मक बुद्धि वाला बालक अपने भावनाओं के साथ–साथ दूसरे की भवनाओं को अच्छे से समझ पाता है। निष्कर्ष रूप में परिस्थितियों से अच्छे से समायोजन कर पाता है, ऐसे बच्चे पढने लिखने काफी अच्छे होते हैं।

सामाजिक उपादेयता

इस शोध अध्ययन से ज्ञात होता है कि बच्चों की अच्छी संवेगात्मक बुद्धि का उनके शिक्षा एवं समायोजन पर धनात्मक प्रभाव पडता है। एक अच्छी संवेगात्मक बुद्धि बालकों की शैक्षिक उपलब्धि को धनात्मक रूप से प्रभावित करते हुए समाज के विकास में योगदान देती है। यह शोध अध्ययन निष्कर्ष रूप में यह भी बताता है कि निम्न भावनात्मक बुद्धि वाले छात्र–छात्राओं की शिक्षा और समायोजन पर यदि विशेष रूप से ध्यान दिया जाए तो इनमें से भी समाज को अच्छे डॉक्टर, इंजिनियर, वकील, वैज्ञानिक, प्रशासनिक अधिकारी और नेतृत्व करता मिल सकेंगे जिससे समाज और देश दोनो का सर्वांगीण विकास होगा।

सुझाव

शोधार्थी द्वारा भावी अध्ययन हेतु जो सुझाव दिए गए हैं वह निम्नवत है –

1. इस प्रकार का अध्ययन भदोही जिले के अतिरिक्त देश के अन्य जिलों में भी किया जाना चाहिए।
2. इस तरह का अध्ययन स्कूल/कालजों के प्रत्येक स्तर– उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उत्तर माध्यमिक, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय प्रत्येक स्तर पर होना चाहिए।
3. इस प्रकार का अध्ययन समाज के प्रत्येक वर्ग– सामान्य पिछडी अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के छात्रों पर अलग–अलग किया जाना चाहिए।
4. इस तरह के अध्ययन में भावात्मक बुद्धि के साथ शैक्षिक उपलब्धि व अन्य चरों को भी लिया जा सकता है।
7. इस तरह का अध्ययन अंग्रेजी एवं हिन्दी दोनो माध्यम से पढने वाले बालकों पर अलग–अलग किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:

1. पाण्डेय, के0पी0 : शैक्षिक अनुसंधान की रूपरेखा
2. डॉ मंगल, यश के0 डॉ मंगल, उमा : विद्यार्थी अधिगम एवं संज्ञान
3. डॉ शर्मा, आर0ए0 : शिक्षा में अनुसंधान
4. श्याम आनन्द : "शिक्षा शास्त्र"
5. प्रो0 गुप्ता, एस0पी0 डॉ गुप्ता, अलका : आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन
6. डॉ शर्मा, आर0ए0 डॉ चतुर्वेदी, शिखा : "निर्देशन एवं परामर्श के मूल तत्व"
7. डॉ पाठक, पीडी : शिक्षा मनोविज्ञान
8. डॉ सारस्वत, मालती : शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा
9. सिंह, अरुण कुमार (2003). शिक्षा मनोविज्ञान, पटना : भारती भवन।
10. अग्रवाल, जे.सी. (2006). शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबन्ध , नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि.।